॥ भटकन ॥

सत्य श्वेत-श्याम, या है सापेक्ष, क्षणिक?

पूर्णत्व चिरंतर, या है सीमित, भ्रमित?

प्रश्न ये है आज, कि प्रश्न किससे पूछूं?

प्रणेता से दूर मैं, अस्तित्व कहाँ ढूँढूँ?

तर्क-वितर्क कितना प्रबल, प्रभावी?

भक्ति है षडयंत्र, या दिशा गुणकारी?

विश्वास किसका करूं गूढ़ दूभर राहों पर?

दिक्सूचक किसे करूं इस जटिलमार्ग पर?

सुर्ख आखें रो रहीं, आंसुओं से बिछड़कर,

लहरें डबडबा रहीं, किनारों से स्नेह कर ।

प्रश्न ये है आज, कि प्रश्न क्या पूछूं?

बवालों में मनवा डूबा, सुकूं कहाँ ढूँढूँ?